











## दिल के जोखिम

भारतीय उपमहाद्वीप के लोगों के बारे में अक्सर कहा जाता रहा है कि वे दिल की भीमारियों की दृष्टि से ज्यादा संवेदनशील होते हैं। देश-विदेश में हुए हाल के अध्ययनों ने इस तथ्य की पुष्टि ही की है। पिछले दिनों आई एनसीआरबी की रिपोर्ट ने भी इस पर मोहर लगायी है। निस्संदेह, देश में कार्डियो वैस्कुलर डिजीज यानी सीबीडी अर्थात् दिल से जुड़े रोगों से होने वाली जीवन क्षति एक गंभीर समस्या बनी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन का यह आंकड़ा चिंता बढ़ाता है कि दुनिया भर में सीबीडी से होने वाली मौतों का पांचवां हिस्सा भारत से है। जो इस संकट की गंभीरता को दर्शाता है। कोरेना संकट के बाद भी देश में हृदयाघात से मरने वालों की संख्या में भी तेजी देखी गई है। वैश्विक रोगों के दबाव विषयक अध्ययन की रिपोर्ट इस संकट की हकीकत बयां कर देती है। जिसमें कहा गया कि वैश्विक स्तर पर जहां प्रति लाख जीवन क्षति का औसत 235 है, वहीं भारत में यह 272 है। दूसरी ओर एनसीआरबी आंकड़े इस संकट की तस्वीर उकेर देते हैं। जिसमें कहा गया है कि हृदयाघात से अचानक होने वाली जीवन क्षति का आंकड़ा जहां 2021 में साढ़े पचास हजार था, वह 2022 में बढ़कर साढ़े छप्पन हजार के करीब पहुंच गया। दरअसल, दिल से जुड़े रोग हमारी जीवनशैली में आए बदलावों की भी देन है। लगातार जटिल होती जीवन व कार्य परिस्थितियां व अराजक खानपान भी इस समस्या के मूल में हैं। हमारे जीवन में घटना शारीरिक श्रम व खानपान की गुणवत्ता में गिरावट भी समस्या बढ़ाती है। इस जटिल समस्या का एक सकारात्मक पक्ष भी है। चिकित्सा विशेषज्ञ बताते रहे हैं कि सजगता व कुछ प्रयासों से इस जीवन क्षति को टाला जा सकता है। जिसमें महत्वपूर्ण भूमिका कार्डियो पर्सो-नरी रिस्पिटेशन यानी सीपीआर की होती है। यदि समय रहते हृदय रोगी को सीपीआर जैसी प्राथमिक चिकित्सा सहायता उपलब्ध करा दी जाए तो उसकी जान बचाई जा सकती है। व्यक्ति की सांस रुके या दिल की धड़कनें बंद हो रही हों, तो यह तकनीक खासी लाभप्रद साबित हो सकती है। जरूरी नहीं है कि मरीज को इसको देने के लिये तुरंत अस्पताल ले जाना हो या किसी उपकरण की जरूरत पड़े। लेकिन विडंबना यह है कि बहुत कम लोगों को इसका प्रशिक्षण दिया गया है। भारत में इस संबंध में जागरूकता भी बेहद कम है। यद्यपि कुछ चिकित्सा व सामाजिक संगठन इस बाबत लगातार जागरूकता अभियान चलाते रहते हैं, लेकिन गांव-देहात में इसका दायरा बढ़ाने की जरूरत है। विकसित देशों में सार्वजनिक स्थलों पर ऑटोमेटेड एक्सटर्नल डिफिल्ब्रिलेटर्स की सुविधा उपलब्ध होती है। जिसके लिये लोगों को जागरूक व प्रशिक्षित किया जाता है। दरअसल, यह एक ऐसा उपकरण है जिसे लोग अपने साथ लेकर चल सकते हैं और सांसों को प्रवाह बाधित होने पर इलेक्ट्रिक शॉक के जरिये उसे नार्मल करने के प्रयास होते हैं। लेकिन इसके साथ ही हमें अपने खानपान, सहज व्यवहार और शारीरिक श्रम बढ़ाने पर ध्यान देना होगा।

आराएसएस के एजेंडे की मूल दिशा, जो जम्मू-कश्मीर की इस बहुसंख्यक आबादी के प्रति वैरभाव पर आधारित है, इस नाजुक रिश्ते को उधेंडे का ही काम कर सकती है, पिछे चाहे एक भूभाग के रूप में उसके किनते ही बड़े हिस्से पर बलपूर्वक नियंत्रण रखना वयों न सभव हो। इसलिए, भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष के बीच से निकली, स्वतंत्र भारत की मूल संकल्पना की परवाह करने वाला कोई व्यक्ति अगर बरबस, बाबरी मस्जिद विवाद में सुप्रीम कोर्ट की पांच सदस्यीय बैंच के ही फैसले के बाद चलन में आई इस उक्ति को एक बार पिछे दोहराए तो हैरानी की बात नहीं होगीकृपी लार्ड, फैसला मिला है, न्याय नहीं। न्याय नहीं मिलने के दो पहलू हैं, जो आगे चलकर आपस में जुड़ जाते हैं। पहला तो यही कि धारा-370 के निरस्त किए जाने को वैध ठहराते हुए, सर्वोच्च न्यायालय ने उस विशिष्ट रिश्ते की ओर से आखें ही मूदे रखी है, जिसकी अभिव्यक्ति इस धारा की विशिष्ट व्यवस्था में हो रही थी। इसी का नतीजा सुप्रीम कोर्ट के फैसले में इस दावे के रूप में सामने आता है कि जम्मू-कश्मीर के भारतीय संघ के साथ विलय की सधि पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद, उसकी कोई इआंतरिक संप्रभुताश् नहीं रह गई थी। और इसलिए, संप्रभुता के इकलौते आसन के रूप में भारतीय संघ को, अपने अंग के रूप में उसके लिए निर्णय लेने के समस्त अधिकार हैं, जिसमें धारा 370 को खत्म करना भी शामिल है।

# मी लाई फैसला मिला है, पर न्याय नहीं मिला!

राजेंद्र शर्मा



न्याय नहीं मिलने का दूसरा पहलू, मोटी सरकार के जम्मू-कश्मीर का राज्य का दर्जा खत्म कर और उसे दो केंद्र शासित क्षेत्रों में बांटने के निर्णय से संबंधित है। राज्य का दर्जा खत्म करने और उट्टकड़ों में बांटने का यह निर्णय, इसके बावजूद लिया गया था कि उस समय जम्मू-कश्मीर विधानसभा अस्तित्व ही नहीं थी जबकि संघीयता के तकाऊ के आधार पर संविधान इसकी स्पष्टता करता है। इसके लिए, संघ का प्रस्तुत राष्ट्रद्वापति द्वारा राज्य की राय हासिल करने के लिए उसे भेजा जाना आवश्यक है, जबले राज्य की राय राष्ट्रद्वापति के लिए बायकर नहीं होती है। इस मानने में कापटपूर्वक इस मानने में राज्य की राय स्थानापन्न के रूप में राज्यपाल की राय को रख दिया गया, जो निर्विवाद रूप से संघीय सरकार व उगंट होता है। विधार करने का प्रथन यह था कि वया केंद्र को इसकी इंजाजत दी जा सकती है कि, उसकी छोटी छोटी घटनाएँ विधार करने की वजह से उसकी विधार की विधियाँ बदल दी जाएँ।

जाने की समस्या सिर्फ यह नहीं है कि यह दिशा आरएसएस के एजेंडे की है। समस्या यह है कि यह दिशा, इस देश के स्वतंत्रता संघर्ष की मूल दिशा से उल्टी है। स्वतंत्रता संघर्ष की उस मूल दिशा ने ही इसका रास्ता बनाया था कि इस्लाम के नाम पर भारत से अलग होकर पाकिस्तान के बनने और ज्यादातर लगते हुए मुस्लिम बहुल इलाके पाकिस्तान में जाने के बावजूद, सीमाएं लगने के बावजूद मुस्लिम बहुल जम्मू-कश्मीर कानूनन भारत के साथ बना रहा है और उसका बड़ा हिस्सा आज भी भारत के अधिकार में है। आरएसएस के एजेंडे की मूल दिशा, जो जम्मू-कश्मीर की इस बहुसंख्यक आबादी के प्रति वैरभाव पर आधारित है, इस नाजुक रिसर्च को उद्घेने का ही काम कर सकती है, पर चाहे एक भूभाग के रूप में उसके कितने ही बड़े हिस्से पर बलपूर्वक नियंत्रण रखना क्यों न संभव हो। इसलिए, भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष के बीच से निकली, स्वतंत्र भारत की मूल संकल्पना की

परवाह करने वाला कोई व्यक्ति अगर बरबस, बाबरी मस्जिद विवाद में सुप्रीम कोर्ट की पांच सदस्यीय बैंच के ही फैसले के बाद चलन में आई इस उक्त को एक बार पिर दोहराए तो हैरानी की बात नहीं होगी कृपी लाई, फैसला मिला है, न्याय नहीं! न्याय नहीं मिलने के दो पहलू हैं, जो आगे चलकर आपस में जुड़ जाते हैं। पहला तो यही कि धारा-370 के निरस्त किए जाने को वैध ठहराते हुए, सर्वोच्च न्यायालय ने उस विशिष्ट रितें की ओर से आख्ये ही मूदे रखी हैं, जिसकी अभिव्यक्ति इस धारा की विशिष्ट व्यवस्था में हो रही थी। इसी का नतीजा सुप्रीम कोर्ट के फैसले में इस दावे के रूप में सामने आता है कि जम्मू-कश्मीर के भारतीय संघ के साथ विलय की संधि पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद, उसकी कोई शान्तिरिक संप्रभुता नहीं रह गई थी। और इसलिए, संप्रभुता के इकलौते आसन के रूप में भारतीय संघ को, अपने अंग के रूप में उसके लिए निर्णय लेने के समस्त अधिकार हैं, जिसमें धारा 370

को खत्म करना भी शामिल है। लेकिन, संप्रभुता की यह नितांत एकात्मवादी अवधारणा है, जबकि भारतीय सांविधान में स्थापित संघीय व्यवस्था, संप्रभुता की एक बहुपरतीय अवधारणा की मांग करती है, जहां स्वायत्ता के रूप में संप्रभुता के तत्व दूर तक बिखेर रहते हैं। राज्यों के अधिकारों की विस्तृत व्यवस्था पर आधारित भारतीय संघीय व्यवस्था, संप्रभुता के तत्वों के इसी बिखारव की अभिव्यक्ति है। धारा-371 के अंतर्गत उत्तर-पूर्व के अनेक राज्यों में तथा अन्य कई राज्यों में भी, संघीय शासन के ब्रक्स स्थानीय शासन को दिए गए विशेषाधिकार, इसी का एक और स्तर है। धारा-370 इसी के एक और स्तर को अभिव्यक्त करती थी, जिसमें इस रूप में इसकी अनुलंबनीयता की गारंटी भी जोड़ी गई थी कि इसका अनुमोदन करने वाली जम्मू-कश्मीर की संविधान सभा के अनुमोदन से ही, इसे बदला जा सकता था। यह एक पवित्र वादे की अभिव्यक्ति थी, जो भारतीय संघ की

विचार

# क्राउड फंडिंग से कांग्रेस का बढ़ेगा जनाधार

ੴ

कंसना युनाव के बीच पहले कांग्रेस ने आर्थिक मदद के नाम से जनता से जुड़ने की अभिनव पहल की है। 28 दिसंबर को पार्टी के 138 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खराग इससे पहले सोमवार को डिजिटल स्वरूप में आमजन से दाना लेने वाली पटिया ली शक्ति अवधि का उद्देश्य

डांट पर दर्या के नाम से स्थानित होने वाले इस आमतयान का महाता धुनाव लड़न के लिए धन दारा एकत्र करने तक सीमित नहीं है, वरन् उसका महत्व इसलिये भी है कि वह नये सिए से आम लोगों को अपनी विचारधारा से जोड़ने जा रही है। इसके साथ ही देश की यह सबसे पुणीयां पार्टी अपनी उस परम्परा को पुनर्जीवित करने जा रही है, जिसके बल पर दुनिया की सबसे विपक्ष भारतीय अवाम के समक्ष विश्व के सर्वाधिक समृद्ध ब्रितानी हुक्मगत को घुटने टेकने के लिये मजबूर होना पड़ा था। देश का स्वतंत्रता संग्राम छोटी-बड़ी मदद के बल पर लड़ा गया था। कांग्रेस को इस तरह जनता के सामने झोली फैलाने की जरूरत इसलिये आनंदी है।  
व्यापक उसका मुकाबला भारतीय जनता पार्टी जैसे अति सम्पन्न दाजनैतिक संगठन के साथ है।

लन का मुहम का शुरूआत कर रहे हैं। डोनेट पॉर देश के नाम से संचालित होने वाले इस अभियान की महत्व चुनाव लड़ने के लिए धन राशि एकत्र करने तक सीमित नहीं है, वरन् उसका महत्व इसलिये भी है कि वह नये सिरे से आम लोगों को अपनी विचारधारा से जोड़ने जा रही है। इसके साथ ही देश की यह सबसे पुरानी पार्टी अपनी उप परम्परा को पुनर्जीवित करने जा रही है, जिसके बल पर दुनिया की सबसे विपन्न भारतीय अवाम के समक्ष विश्व के सर्वाधिक समृद्ध छितानी हुकूमत को घुटने टेकने के लिये मजबूर हाना पड़ा था। देश का स्वतंत्रता संग्राम छोटी-बड़ी मदद के बल पर लड़ा गया था। कांग्रेस को इस तरह जनता के सामने झोली फैलाने की जरूरत इसलिये आन पढ़ी है क्योंकि उसका मुकाबला भारतीय जनता पार्टी जैसे अति सम्पन्न राजनीतिक संगठन के साथ है। दशक भर में उसने जैसा पैसा एकत्र किया है और उसका वह व्यय करती हुई दिख भी पड़ती है, उसके सामने किसी भी सामान्य दल का टिके रहना मुश्किल है। अब तक कांग्रेस उसका जिस प्रकार से भी मुकाबला कर रही है, वह अपने समर्पित कार्यकर्ताओं के बल पर ही, लेकिन 2024 का आम चुनाव लोकतंत्र के लिहाज से जिस प्रकार महत्वपूर्ण हो गया है, उसके चलते सम्भव है कि कांग्रेस कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती। देखना यही होगा कि जनता कांग्रेस की दान की अपील को कैसा प्रतिसाद देती है। शनिवार को दिल्ली स्थित कांग्रेस मुख्यालय में आयोजित एक प्रेस काफ्रेंस में महासचिव केसी वेणुगोपाल एवं पार्टी के कोषाध्यक्ष अजय माकन ने बताया कि डोनेट फॉर देश अभियान के अंतर्गत आमजन कांग्रेस को परम्परागत तरीकों के अलावा भुगतान के सभी डिजिटल माध्यमों के जरिये भी दान दे सकते हैं। इसके लिये एक अलग बेसाइट भी बनाई गई है। कुछ ही दिनों में कार्यकर्ता घर-घर घूमकर चढ़ा एकत्र करेंगे। दान की न्यूनतम राशि 138 रुपये रखी गई है। यह सहयोग राशि उसके गुण किये जाने वाली संख्या में अधिकतम कुछ भी हो सकती है, यानी 1380, 13800 और ऐसे ही आगे। यह राशि इसलिये चुनी गई है क्योंकि कांग्रेस अपनी स्थापना के 138 वर्ष पूर्ण करने जा रही है। यह धन संग्रह मुहिम करीब एक सौ साल पहले (1920-21) महात्मा गांधी द्वारा देश की स्वतंत्रता के लिये चलाये गये शिलक स्वराज फॅंडश से अभिप्रैति बतलाई गई है। कांग्रेस को इस तरह के चंदा अभियान की आवश्यकता इसलिये महसूस हुई क्योंकि पिछले कुछ समय से भाजपा ने जहां खुद को अर्थिक दृष्टि से बेहद मजबूत किया है वहीं उसने विरोधी दलों को मदद राशि मिलने के सारे रास्ते यथासम्भव बन्द कर दिये हैं। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की एक रिपोर्ट बताती है कि इलेक्टोरल बॉड के जरिये प्राप्त हुए करीब 9188 करोड़ रुपये में से 5272 करोड़ रुपए अकेली भाजपा को मिले। शेष लगभग 1780 करोड़ रुपए अन्य 7 राष्ट्रीय व 24 क्षेत्रीय दलों के पास पहुंचे। भारी-भरकम खर्चों से होने वाले चुनावी प्रचार अभियानों के माध्यम से भाजपा ने चुनाव प्रक्रिया को ही इतना खर्चीला कर दिया है कि किसी भी दल का उसके साथ मुकाबला करना बहुत मुश्किल हो गया है। सत्ता हाथ में होने के कारण और उसकी आर्थिक नीतियों के चलते वह उद्योगपतियों व कारोबारियों की पसंदीदा पार्टी बन गई है। केन्द्र की सकार उसकी अपनी होने के कारण देश के भीतर जहां उसके दफ्तरों के सामने चंदा देने वालों की कतारें लगती हैं, अन्य दलों द्वारा प्राप्त होने वाले धन पर उसकी वक्र दृष्टि होती है। उसके पास उपलब्ध केन्द्रीय जांच एजेंसियों का वह खुलकर

उत्पान विषयों दला व नाजा क खिलाफ करती है। जिन पूँजीपतियों को उसने अपनी नीति से पफदा पहुँचाया है, उसके फलस्वरूप उसके पास पैसे की किलत होने का सवाल ही पैदा नहीं होता। यह चर्चा भी आम है कि नोटबन्दी की बहती गंगा में भाजपा ने अपने हाथ धोये हैं। पूरे भारत में उसके आलीशान कार्यालय, भव्य रोड शो, खूब खचाली प्रचार सभाएं साफ बतलाती हैं कि वह देश ही नहीं सम्प्रवतरू दुनिया की सबसे अमीर पार्टी है। जाहिर है कि ऐसी मालामाल पार्टी के साथ मुकाबला बेहद कठिन है। इसके साथ ही अगले लोकसभा चुनाव का जैसा महत्व है, कांग्रेस के समक्ष लोगों से मदद मांगने के अलावा कोई चारा नहीं रह गया है। इसके माध्यम से पार्टी न केवल अपने खर्च का बंदोबस्त करेगी वरन् लोगों से उसका व्यापक जु़दाव हो सकेगा। उसे वे लोग मदद करेंगे जो कांग्रेस की विचारधारा से इत्तेफ़क रखते हैं। बड़ी तादाद में ऐसे नागरिक हैं जो चाहते हैं कि कांग्रेस मजबूत हो लेकिन वे उसकी मदद नहीं कर पाते। ये सामाज्यजन होते हैं जो अल्प राशि ही देने में सक्षम हैं। वे निश्चित ही आगे अंथरेंगे। इससे कांग्रेस की नीतियों, कार्यक्रमों एवं योगदान का चर्चा आम हो सकेगा जिसका उसे चुनावी लाभ भी मिलेगा।

## राष्ट्र का उन्नत में विद्या-ज्ञान का मूलमका

सवावादात है कि ज्ञानास का लिटेरें तो हर सभ्यता ने अपने ईरु रूप बदले हैं संस्कृति ने नए ए आयाम का सूजन किया हैस जीवन परिवर्तन का पर्याय है विकास का स्वरूप हैस यह लीन सत्य है कि शिक्षा एवं महत्व हर संस्कृति, सभ्यता गानवीय समुदाय के जीवन में प्रकाश पुंज की तरह उहे न की दिशा दिखाए हुए आया जेस देश की भाषा जितनी होगी उस देश की सभ्यता ते और ज्ञान उत्तम शिखर पर प्रकाश पुंज मानवीय विकास के साथ को अधिक परिपक्व को धारा तथा सम्पूर्ण बनाने में भाषा, ज्ञान और साहित्य का एक महत्व रहा हैस शिक्षा चाहे एवं विवरार से प्राप्त हुई हो, स्कूल अथवा किसी शिक्षण से प्राप्त हुई हो या भारतीय विदेश के वैदिक शास्त्रों से प्राप्त हुई शिक्षा का मनुष्य के व्यक्तित्व के में बड़ी अहम भूमिका होती रहती है और कला साहित्य को देश विदेश की सीमाओं में बांधा जा सकता है। यह असीमित है एवं इसमें आकाशीय वायं भी शामिल रहती हैस शिक्षा न तो गहराइयां न ही नापी नजा सकता है, और ना ही इसका ऊंचाई को देखा जा सकता है। पूर्वी सभ्यता जहां अध्यात्म, वेद, पुराणों पर अवलंबित है, वर्हं पश्चिमी सभ्यता ज्ञान विज्ञान नए नए अविष्कार और आकाश की अनछुई कई बातों को उजागर करने वाली है। ऐसी शिक्षा तथा ज्ञान के कारण मानव चंद्रमा पर पहुंच कर एक नई गाथा लिख पाया हैस वस्तुतः पूर्व तथा पश्चिम ज्ञान विज्ञान तथा शिक्षा के मामले में एकाकार हो चुका है कोई भी भेदभाव या विभाजन रेखा नहीं खींची जा सकती हैस पूरी सभ्यता ने जहां पाश्चात्य दर्शन से नए नए अविष्कारों हवाई जहाज, इंजन, ग्रामोफोन, रेडियो एवं नई नई टेक्नोलॉजी को अपनाया है वर्हं पश्चिमी दर्शन ने भारती ज्ञान विज्ञान संस्कार आयुर्वेद योग धर्म दर्शन को अपना कर अपनी जीवनशैली में शांति तथा सौभाग्य स्थापित किया हैस यह सब शिक्षा भाषा एवं ज्ञान के बदौलत पूर्वी और पश्चिम का मेल संभव हो पाया हैस शिक्षा और भाषा सदैव ही अज्ञानता के तमस में एक प्रकाश पुंज की तरह देवीप्रायमान होता रहा है, नवजीवन की विकास धारा में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया हैस हमारे कई धर्मों में जिनमें जैन, बौद्ध दर्शन, नव्य वेदांत तथा भारतीय संस्कृति के नवीन चिंतन के समाने आने से नवयुग की कल्पना को साकार किया है। पश्चिम के कई विद्वान और चिंतक जिनमें प्लूटो,



# રાશીપણ

**मेष:-** काफी दिनों से अवरोधित करें हल होने के आसार बनेंगे। जीवन साथी के स्वास्थ्य के प्रति सतर्कता अपेक्षित है। शिक्षा प्रतियोगिता की दिशा में किया गया प्रयत्न सार्थक होगा।

**बृष्टधन:-** भावुकता व्यावहारिक जगत के अनुकूल चलने में बाधक होगी। अतः व्यवहार कुशल बने। भविष्य संबंधी कुछ चिंताएं मन पर प्रभावी होंगी। विद्यार्थी शिक्षा में

**मिथुनः-** मूल्यवान समय को व्यर्थ के कायरें में जाया न करें। नयी दिशा में सकारात्मक सोच अवश्य संग लायेगी। जीवन को सही दिशा की ओर केंद्रित करें।

**कर्क:-** नये व्यावसायिक संबंध प्रगाढ़ होंगे। संवेदनशील शरीर ग्रहण की प्रतिकूलता से बीमार पड़ सकता है। महत्वपूर्ण कार्य की पर्ति में अस्समर्था जैसी स्थिति

**नहरपूरी कारण का गूरा है जिसनवतो जसा इस्तात  
मन को निराश करेगी।**

पारजना के दिल में जगह बनाय। याजनाओं का पर्णीभूत होने से मन प्रसन्न होगा। महत्वपूर्ण कायरें में लापराही कराई न करें।

**कन्या:-** जीवनसाथी के स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। नये कायरें के क्रियान्वयन हेतु प्रयत्न तीव्र होगा। नये क्षेत्रों में प्रयास से लाभ संभव। व्यावसायिक यात्रा द्वारा लाभ होगा।

**स्वामी, मुद्रक व प्रकाशक:** जितेन्द्र सिंह द्वारा एवीबी रिपोर्ट्याफिक्स ए-५९ इण्डस्ट्रियल एरिया तालकटोरा लखनऊ से मुद्रित एवं कार्यालय २/३५३, विशाल खण्ड-२ गोमती नगर लखनऊ (उ.प्र.) से प्रकाशित। **सम्पादक जितेन्द्र सिंह\*** (\*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के तहत उत्तरदायी\*) समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही मान्य होंगे। आरएनआई न . UPHIN/2013/55887, Email : samradhinews@gmail.com

( \*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के तहत उत्तरदायी\*) समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही मान्य होंगे। आरएनआई न . UPHIN/2013/55887, Email : samradhinews@gmail.com













# 24 करोड़ 75 लाख रुपये में बिके स्टार्क

एजेंसी

**आईपीएल  
सीजन  
2024**



दुबई। ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क ने एक घंटे में ही अपने साथ खिलाड़ी पैट कमिंस का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। मिचेल स्टार्क अब आईपीएल इतिहास के सबसे महंगे खिलाड़ी बन गए हैं। कोलकाता नाइट राइडर्स ने मिचेल स्टार्क को 24 करोड़ 75 लाख रुपये में खरीदा है।

आईपीएल के इतिहास में पहले दिन में दो बड़े रिकॉर्ड बने। ये दोनों ही

**ट्रेविस हेड को एसआरएस ने खरीदा**  
आईपीएल 2024 ऑक्शन में ऑस्ट्रेलियाई स्टार खिलाड़ी ट्रेविस हेड को खरीदने के लिए कई फैंचाइजियों में जमकर होड़ रहीं। लेकिन आखिरकार हेड हैदराबाद के खेमे में गए। दरअसल, सनराइजर्स हैदराबाद फैंचाइजी ने ट्रेविस हेड को 6 करोड़ 80 लाख रुपये में संचयिता की। आईपीएल 2024 को नीलामी प्रक्रिया जारी है। दुबई के फैंचाइजियों में संचयिता है। एसआरएल ने ट्रेविस हेड को खरीदने के लिए कई फैंचाइजियों में जमकर होड़ रही। लेकिन आखिरकार हेड हैदराबाद के खेमे में गए। सनराइजर्स हैदराबाद फैंचाइजी ने ट्रेविस हेड को 6 करोड़ 80 लाख रुपये में खरीदा है। दरअसल, ट्रेविस हेड को खरीदने के लिए बिंदु हुई। आखिर में बाजी हैदराबाद के हाथ थी। ट्रेविस हेड ने वर्कट हेड को खरीदने के लिए बिंदु हुई। इस दौरान भारत के खिलाफ फाइनल मुकाबले में वो ऑस्ट्रेलिया के लिए संकटमोबद्ध बने और अपनी टीम को खिलाफ दिलाने में अहम भूमिका निभाई।

रिकॉर्ड ऑस्ट्रेलिया के खिलाड़ियों ने बनाए। दरअसल, ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क ने एक घंटे में ही अपने साथ खिलाड़ी पैट कमिंस का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। मिचेल स्टार्क अब आईपीएल इतिहास के सबसे महंगे खिलाड़ी बन गए हैं। कोलकाता नाइट राइडर्स ने मिचेल स्टार्क को 24 करोड़ 75 लाख रुपये में खरीदा है। स्टार्क को खरीदने के लिए बुजर्गत

टाइट्स और केकेआर के बीच काफी जोड़ रही है। स्टार्क आईपीएल में 8 साल बाद वापसी कर रहे हैं। मिचेल स्टार्क का बेस प्राइस दो करोड़ 80 पर्यंत था। मिचेल स्टार्क के नाम का जैसे ही ऐलन हुआ तो मुंबई इंडियन्स और दिल्ली कैपिटल्स ने सबसे पहले बोली लाइंग। शुरुआत में बोली 12 करोड़ 75 लाख रुपये में खरीदा है। इसके बाद चौथे तक चौथे बाद बन गए। बोली 12 करोड़ 80 रुपये तक पहुंच गई। ऐसे में दिल्ली कैपिटल्स और मुंबई इंडियन्स बोली से पीछे हट गए। केके�आर और गुजरात के पर्स में 31 करोड़ से ज्यादा थे। इसके बाद दोनों फैंचाइजियों ने 20 करोड़ 80 रुपये तक बोली लाइंग। ऐसे में मिचेल स्टार्क आईपीएल इतिहास के दूसरे 20 करोड़ 80 पर्यंत बन गए थे।

**मैनचेस्टर यूनाइटेड ने लिवरपूल को झूँ पर रोका, आर्सेलन तालिका में फिर से शीर्ष पर**



इंग्लिश प्रीमियर लीग (ईपीएल) फूटबॉल में मैनचेस्टर यूनाइटेड ने लिवरपूल को गोलरहित झूँ पर रोक दिया जबकि आर्सेलन ने रिंगरार को ब्रिटिश को 2-0 से शिकस्त दी। लिवरपूल इस झूँ मुकाबले बाद तालिका में दूसरे स्थान पर खिसक गया जबकि आर्सेलन एक बार फिर से शीर्ष पर काविंग हो गया।

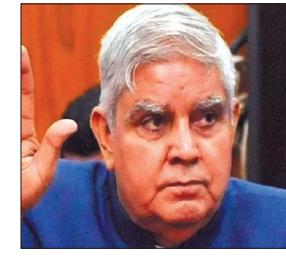
मैनचेस्टर यूनाइटेड ने इंग्लिश प्रीमियर लीग (ईपीएल) फूटबॉल में लिवरपूल को गोलरहित झूँ पर रोक दिया जबकि आर्सेलन ने रिंगरार को ब्रिटिश को 2-0 से शिकस्त दी। लिवरपूल इस झूँ मुकाबले बाद तालिका में दूसरे स्थान पर खिसक गया जबकि आर्सेलन एक बार फिर से शीर्ष पर काविंग हो गया।

आर्सेलन और लिवरपूल के स्तर को ऊचा करते हुए, एक भी गोल करने की जीत दिलाई गई। आर्सेलन ने दूसरे हाफ में बोली 36 और 38 अंक है। मैनचेस्टर यूनाइटेड को लिवरपूल ने 0-7 के बढ़े अंतर

से हारा था लेकिन नये कोच एपिक टेन हैरा की देख रेख में टीम ने अपने प्रदर्शन के स्तर को ऊचा करते हुए, एक भी गोल करने की मौका नहीं दिलाई गई। आर्सेलन ने दूसरे हाफ में 71वें मिनट में रेड कार्ड दिखाया गया जिसके बाद टीम 10 खिलाड़ियों के साथ मैच खेला। मोहम्मद कुद्रात के दो गोल के दम पर वेस्ट हम ने बोल्ट्स को 3-0 से हाराया। कुद्रात ने 0-7 मिनट के अंदर दो गोल पहले हाफ के आखिरी छान में कीन लुईस-पॉटर के गोल के बाद 0-1 में विजय की दिलाई गई।

**जगदीप धृष्णु की नकल पर नाराज हुआ जाट समाज**

**कहा- लोकसभा चुनावों में इसका जवाब जरूर मिलेगा**



नई दिल्ली, एजेंसी। इंडी गठबंधन के बैठक से पहले केजरीवाल ने तमिलनाडु की सीएम एमके स्टालिन से की मुलाकात

शमिल होने के बाद भारतीय खिलाड़ी के बीच एपिक टेलर बताया गया। एपिक टेलर के लिए खिलाड़ी सबसे महंगे खिलाड़ी बिके।

गुजरात टाइट्स ने सबसे पहले उन पर बोली लाइंग। फिर पंजाब और लखनऊ के बीच उड़े खिलाड़े के लिए खिलाड़ी को मिला। उड़े पंजाब किस्म ने 11.75 करोड़ 80 पर्यंत में खरीदा। हर्षल इस नीलामी में बिकने वाले सबसे महंगे भारतीय खिलाड़ी रहे।

हर्षल आईपीएल के पिछले संजन में आरसीबी का पार्ट था। नीलामी में आरसीबी का खिलाड़ी था।

गुजरात टाइट्स ने सबसे पहले उन पर बोली लाइंग। फिर पंजाब और लखनऊ के बीच उड़े खिलाड़े की रेस लखनऊ के पर्स में कम कीमत होने के कारण वो पीछे हट गई। आरसीबी ने हर्षल के लिए थोड़ी भी दिलचस्पी नहीं दिखाई। हर्षल टी20 क्रिकेट के बेहतरीन गेंदबाज माने जाते हैं। स्टोअर गेंदों से विकेट चटकाने में माहिर है। इसने अपनी टीम के लिए खेलते हुए पर्फॉर्मेंट कैप हासिल की थी।

गुजरात टाइट्स ने सबसे पहले उन पर बोली लाइंग। फिर पंजाब और लखनऊ के बीच उड़े खिलाड़े के लिए खिलाड़ी देखने को मिला। उड़े पंजाब किस्म ने 11.75 करोड़ 80 पर्यंत में खरीदा। हर्षल इस नीलामी में बिकने वाले सबसे महंगे भारतीय खिलाड़ी रहे।

हर्षल आईपीएल के पिछले संजन में आरसीबी का पार्ट था। नीलामी में आरसीबी का खिलाड़ी था।

उड़े पंजाब के बीच उड़े खिलाड़े की रेस लखनऊ के पर्स में कम कीमत होने के कारण वो पीछे हट गई। आरसीबी ने हर्षल के लिए थोड़ी भी दिलचस्पी नहीं दिखाई। हर्षल टी20 क्रिकेट के बेहतरीन गेंदबाज माने जाते हैं। स्टोअर गेंदों से विकेट चटकाने में माहिर है। इसने अपनी टीम के लिए खेलते हुए पर्फॉर्मेंट कैप हासिल की थी।

उड़े पंजाब के बीच उड़े खिलाड़े की रेस लखनऊ के पर्स में कम कीमत होने के कारण वो पीछे हट गई। आरसीबी ने हर्षल के लिए थोड़ी भी दिलचस्पी नहीं दिखाई। हर्षल टी20 क्रिकेट के बेहतरीन गेंदबाज माने जाते हैं। स्टोअर गेंदों से विकेट चटकाने में माहिर है। इसने अपनी टीम के लिए खेलते हुए पर्फॉर्मेंट कैप हासिल की थी।

उड़े पंजाब के बीच उड़े खिलाड़े की रेस लखनऊ के पर्स में कम कीमत होने के कारण वो पीछे हट गई। आरसीबी ने हर्षल के लिए थोड़ी भी दिलचस्पी नहीं दिखाई। हर्षल टी20 क्रिकेट के बेहतरीन गेंदबाज माने जाते हैं। स्टोअर गेंदों से विकेट चटकाने में माहिर है। इसने अपनी टीम के लिए खेलते हुए पर्फॉर्मेंट कैप हासिल की थी।

उड़े पंजाब के बीच उड़े खिलाड़े की रेस लखनऊ के पर्स में कम कीमत होने के कारण वो पीछे हट गई। आरसीबी ने हर्षल के लिए थोड़ी भी दिलचस्पी नहीं दिखाई। हर्षल टी20 क्रिकेट के बेहतरीन गेंदबाज माने जाते हैं। स्टोअर गेंदों से विकेट चटकाने में माहिर है। इसने अपनी टीम के लिए खेलते हुए पर्फॉर्मेंट कैप हासिल की थी।

उड़े पंजाब के बीच उड़े खिलाड़े की रेस लखनऊ के पर्स में कम कीमत होने के कारण वो पीछे हट गई। आरसीबी ने हर्षल के लिए थोड़ी भी दिलचस्पी नहीं दिखाई। हर्षल टी20 क्रिकेट के बेहतरीन गेंदबाज माने जाते हैं। स्टोअर गेंदों से विकेट चटकाने में माहिर है। इसने अपनी टीम के लिए खेलते हुए पर्फॉर्मेंट कैप हासिल की थी।

उड़े पंजाब के बीच उड़े खिलाड़े की रेस लखनऊ के पर्स में कम कीमत होने के कारण वो पीछे हट गई। आरसीबी ने हर्षल के लिए थोड़ी भी दिलचस्पी नहीं दिखाई। हर्षल टी20 क्रिकेट के बेहतरीन गेंदबाज माने जाते हैं। स्टोअर गेंदों से विकेट चटकाने में माहिर है। इसने अपनी टीम के लिए खेलते हुए पर्फॉर्मेंट कैप हासिल की थी।

उड़े पंजाब के बीच उड़े खिलाड़े की रेस लखनऊ के पर्स में कम कीमत होने के कारण वो पीछे हट गई। आरसीबी ने हर्षल के लिए थोड़ी भी दिलचस्पी नहीं दिखाई। हर्षल टी20 क्रिकेट के बेहतरीन गेंदबाज माने जाते हैं। स्टोअर गेंदों से विकेट चटकाने में माहिर है। इसने अपनी टीम के लिए खेलते हुए पर्फॉर्मेंट कैप हासिल की थी।

उड़े पंजाब के बीच उड़े खिलाड़े की रेस लखनऊ के पर्स में कम कीमत होने के कारण वो पीछे हट गई। आरसीबी ने हर्षल के लिए थोड़ी भी दिलचस्पी नह